अध्याय 1

कर्म

प्रश्न 1. कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर कार्माण वर्गणा के समूह को कर्म कहते हैं अथवा जो आत्मा को दुख दे उसे कर्म कहते हैं।

प्रश्न 2. कर्म कितने होते हैं ?

उत्तर कर्म मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं।

1. भाव कर्म 2. द्रव्य कर्म 3. नो कर्म

प्रश्न 3. भाव कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जीव के रागद्वेष आदि विकारी भाव को भावकर्म कहते हैं।

प्रश्न 4. द्रव्य कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर ज्ञानावरणादि पौद्गलिक कर्म स्कंधों को द्रव्य कर्म कहते हैं।

प्रश्न 5. द्रव्य कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर द्रव्य कर्म यद्यपि संख्या की अपेक्षा से संख्यात, असंख्यात और अनंत भेद हैं किन्तु जाति की अपेक्षा से आठ भेद हैं।

प्रश्न 6. द्रव्य कर्म के आठ भेद कौन – कौन से हैं ?

उत्तर 1. ज्ञानावरणीय 2. दर्शनावरणीय 3. वेदनीय

4. मोहनीय 5. आयु 6. नाम

7. गोत्र 8. अन्तराय

प्रश्न 7. भाव कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर राग, द्वेष, मोह आदि अनेक भेद हैं।

प्रश्न 8. नो कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जो कर्म तो नहीं है, किन्तु कर्म में सहायक हो जैसे शरीर इन्द्रिय आदि अथवा किंचित् कर्म को नो कर्म कहते हैं।

प्रश्न 9. नो कर्म के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर तीन शरीर, छः पर्याप्ति, इन्द्रियाँ, मन, शैया, अन्न पानादि की नो कर्म सार्थक संज्ञा है।

प्रश्न 10. तीन शरीर कौन – कौन से हैं ?

उत्तर औदारिक, वैक्रियिक, आहारक।

प्रश्न 11. औदारिक, वैक्रियिक और आहारक इन तीनों शरीर की परिभाषा लिखो ?

उत्तर औदारिक शरीर –मनुष्य या तिर्यंच के उदार या स्थूल शरीर को औदारिक शरीर कहते हैं।

वैक्रियिक शरीर – देवों और नारकियों के शरीर को वैक्रियिक शरीर कहते हैं।

आहारक शरीर – सूक्ष्म पदार्थ का ज्ञान करने के लिए या असंयम को दूर करने की इच्छा से प्रमत्त संयत के जिस शरीर की रचना होती है, उसे आहारक शरीर कहते हैं।

प्रश्न 12. छ: पर्याप्तियों के नाम व उनकी परिभाषाएँ लिखिए ?

उत्तर 1. आहार 2. शरीर 3. इन्द्रिय 4.श्वासोच्छ्वास

5. भाषा 6. मन ये छ: पर्याप्तियाँ हैं।

1. आहार –तीन (औदारिक आदि) शरीरों और छह पर्याप्तियों के योग्य पुद्गलों का ग्रहण, आहार पर्याप्ति है।

2. शरीर – औदारिक आदि चार शरीरों की शक्ति की पूर्णता होना शरीर पर्याप्ति है।

3. इन्द्रिय – यथा योग्य जीवों को प्राप्त इन्द्रियों की शक्ति की पूर्णता होना इन्द्रिय पर्याप्ति है।

4. श्वासोच्छ्वास – बाहर की वायु का ग्रहण और भीतर की वायु का नि:सरण के योग्य होने की शक्ति की पूर्णता श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति है।

5. भाषा – वचन योग्य भाषा वर्गणा के परमाणुओं को ग्रहण करने रूप शक्ति की पूर्णता का नाम भाषा पर्याप्ति है।

6. मन – मनोवर्गणा के परमाणुओं का मन रूप पूर्ण होना, मन: पर्याप्ति है।

नोट – सप्त धातु

1. रस 2. रक्त 3. माँस 4. मेदा 5. हड्डी

6. मज्जा 7. वीर्य

उपधातु – 1. वात 2. पित्त 3. श्लेष्म 4. सिरा 5. स्नायु

6. चर्म 7. उदराग्नि पर्याप्ति है।

5. भाषा – वचन योग्य भाषा वर्गणा के परमाणुओं को ग्रहण करने रूप शक्ति की पूर्णता का नाम भाषा पर्याप्ति है।

6. मन – मनोवर्गणा के परमाणुओं का मन रूप पूर्ण होना, मन: पर्याप्ति है।

अध्याय 2

जीव और कर्म

प्रश्न 1. जीव और कर्म का क्या संबंध है?

उत्तर जीव और कर्म का निमित्त नैमित्तिक संश्लेष संबंध है।

प्रश्न 2. कौन से जीव का कर्म के साथ निमित्त-नैमित्तिक संबंध या संश्लेष संबंध है?

उत्तर संसारी जीव का कर्म के साथ, नैमित्तिक व संश्लेष संबंध है।

प्रश्न 3. निमित्त किसे कहते हैं?

उत्तर जो कार्य की उत्पत्ति में सहायक हो उसे निमित्त कहते हैं।

प्रश्न 4. क्या जो कार्य की उत्पत्ति में सहायक न हो उसे निमित्त नहीं कहते हैं?

उत्तर हाँ जो कार्य की उत्पत्ति में सहायक नहीं होता उसे निमित्त नहीं कहते हैं।

प्रश्न 5. किसी दृष्टान्त द्वारा समझाइये?

उत्तर जैसे नेमिनाथ की दिव्यध्वनि सुन बलभद्र को वैराग्य हो गया और इन्होने दीक्षा ले निर्वाण की प्राप्ति की। किन्तु उस समय उन्ही के साथ आये अन्य राजाओं को वैराग्य नहीं हुआ। इसीलिये बलभद्र के लिए तो दिव्यध्वनि निमित्त सहायक बनी, किन्तु अन्य के लिए नहीं।

प्रश्न 6. दिव्य ध्वनि तो दोनों ने सुनी इसीलिये वह निमित्त दोनों के लिए क्यों नहीं बनी?

उत्तर नहीं दोनों के लिए वह निमित्त नहीं बनी। क्योंकि दोनों को नैमित्तिक कार्य को उत्पन्न नहीं करा सकी, इसलिये दोनों को निमित्त नहीं बनी, अपितु जिसके नैमित्तिक रूप कार्य को उत्पन्न करा सकी उसके लिए ही निमित्त बनी, इसी प्रकार दृष्टांत समझना चाहिए। कार्य की उत्पत्ति में एक ही निमित्त नहीं होता अनेक होते हैं उन अनेकों में परिणामों की निर्मलता, काल संधि आदि हैं जो उन्हें प्राप्त नहीं थे। उपादान एक होता है और निमित्त बहुत। जिसके जितने निमित्त आवश्यक हैं उतने उसे मिलने पर कार्य होता है। तभी उसे कार्य को उन सब निमित्तों से जन्य माना जाता है, नैमित्तिक कहा जाता है।

प्रश्न 7. लेकिन उसे निमित्त कहा तो जाता है।

उत्तर कहना यह एक अलग बात है किन्तु निमित्त होना एक अलग बात है। कहने में तो बहुत सारा कथन उपचार से होता है।

प्रश्न 8. जीव और कर्म का निमित्त नैमित्तिक संबंध क्यों है?

उत्तर कभी-कभी जीव की रागद्वेष रूप विकारी परिणति कार्माण वर्गणा को कर्म रूप परिणमाने में निमित्त बनती है और कभी-कभी उदयागत कर्मजीव को रागद्वेष उत्पन्न कराने में निमित्त बनते हें इसीलिये जीव व कर्म का परस्पर निमित्त-नैमित्तिक संबंध है।

प्रश्न 9. कर्मास्रव के कितने निमित्त हैं?

उत्तर कर्मास्रव के यद्यपि अनेक निमित्त हैं किन्तु उनमें मुख्यत: तीन है - काय योग, वचन योग और मनो योग।

प्रश्न 10. कर्मास्रव के कितने भेद हैं?

उत्तर कर्मास्रव के मुख्य दो भेद हैं -

1. द्रव्यास्रव 2. भावास्रव

प्रश्न 11. भावास्रव किसे कहते हैं?

उत्तर संसारी जीव के जिन परिणाम विशेषों से पुद्‌गल द्रवय, कर्म बनकर आत्मा में आता है उस परिणाम विशेष को भावास्रव कहते हैं।

प्रश्न 12. द्रव्यास्रव किसे कहते हैं?

उत्तर ज्ञानावरणादि कर्मों के योग्य जो पुद्‌गल द्रव्यकर्म बनकर आत्मा में आता है, उस द्रव्य विशेष को द्रव्यास्रव कहते हैं।

प्रश्न 13. द्रव्यास्रव के कितने भेद हैं?

उत्तर द्रव्यास्रव के यद्यपि असंख्यात लोकप्रमाण भेद हैं फिर भी उसके मुख्य आठ भेद हैं।

1. ज्ञानावरणीय 2. दर्शनावरणीय 3. वेदनीय
4. मोहनीय 5. आयु 6. नाम

7. गोत्र 8. अन्तराय।

प्रश्न 14. एक समय में कितने कर्मों का आस्रव होता है ?

उत्तर 1. जितने भी जीव आज तक सिद्ध हुए हैं उनके अनंतवें भाग प्रमाण और समस्त अभव्य जीवों के अनंतवें गुणित कर्मों का आस्रव बंध प्रत्येक समय में संसारी जीव के हो रहा है।

2. आठों कर्मों में से आठों या सातों कर्मों का आस्रव संसारी जीव को एक समय में हो रहा है।

प्रश्न 15. आपने आठों या सातों क्यों कहा ? आठ ही या सात ही क्यों नहीं कहा ?

उत्तर नहीं ! क्योंकि आयुकर्म का आस्रव या बंध प्रत्येक समय में नहीं होता है अपितु एक भव में होने वाले आयु के त्रिभाग में एक ही बार होता है। अत: जिस समय आयु कर्म का आस्रव बंध हो रहा है उस समय की अपेक्षा आठ समझना, शेष समय की अपेक्षा सात समझना।

अध्याय 3

भावास्रव

प्रश्न 1. भावास्रव किसे कहते हैं ?

उत्तर आत्मा के जिन परिणामों से पुद्गल द्रव्य कर्म बनकर आत्मा में आता है उन परिणामों को भावास्रव कहते हैं।

प्रश्न 2. भावास्रव के कितने भेद हैं ?

उत्तर भावास्रव के यद्यपि अनेक भेद हैं, किन्तु उनमें मुख्य पाँच है।

प्रश्न 3. भावास्रव के अनेक भेद कैसे हैं ?

उत्तर भावों के अनेक भेद होने से भावास्रव के असंख्यात लोक प्रमाण भेद है।

प्रश्न 4. भावास्रव के मुख्य 5 भेद कौन-कौन से हैं ?

उत्तर भावास्रव के मुख्य 5 भेद निम्न है -

1. मिथ्यात्व 2. अविरति 3. प्रमाद
4. कषाय 5. योग

प्रश्न 5. मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उत्तर अतत्त्व श्रद्धान को मिथ्यात्व कहते हैं।

प्रश्न 6. मिथ्यात्व के कितने भेद है ?

उत्तर मिथ्यात्व के मुख्य दो भेद है।

1. गृहीत 2. अगृहीत

प्रश्न 7. गृहीत मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उत्तर जो दूसरों के उपदेशादि से जीवादि के अस्तित्व में या उनके धर्मों में अश्रद्धा होती है वह गृहीत मिथ्यात्व है।

प्रश्न 8. अगृहीत मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उत्तर जो दूसरों को उपदेशादि के बिना जीवादि तत्त्वों में अश्रद्धा होती है उसे अगृहीत मिथ्यात्व कहते हैं।

प्रश्न 9. मिथ्यात्व के अन्य प्रकार से कितने भेद हैं ?

उत्तर पाँच भेद हैं - 1. एकान्त 2. विपरीत 3. विनय 4. संशय 5. अज्ञान

प्रश्न 10. एकान्त मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उत्तर किसी एक अंश को ही सर्वथा संपूर्ण वस्तु होने की श्रद्धा करना एकांत मिथ्यात्व है। जैसे संसारी जीव सर्वथा शुद्ध ही है।

प्रश्न 11. विपरीत मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर विपरीत श्रद्धान को विपरीत मिथ्यात्व कहते हैं।
जैसे – हिंसादि से धर्म होता है।

प्रश्न 12. विनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर सत्य और असत्य दोनों को समान मानना, श्रद्धान करना, यथार्थ का निर्णय नहीं करना यह विनय मिथ्यात्व है।
जैसे – सभी देव समान है।

प्रश्न 13. संशय मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर यह सत्य है या वह सत्य है इस प्रकार के उभयकोटि स्पर्शी श्रद्धान को संशय मिथ्यात्व कहते हैं।
जैसे – धर्म करने से सुख होता है या अधर्म करने से।

प्रश्न 14. अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर यथार्थ को कोई नहीं जानता है जैसे जीव है यह कौन जानता है। कोई नहीं इत्यादि श्रद्धा को अज्ञान मिथ्यात्व कहते हैं। अज्ञान ही मुक्ति का कारण है, ज्ञान नहीं, ऐसा श्रद्धान करना अज्ञान मिथ्यात्व है।

प्रश्न 15. अविरति किसे कहते हैं?

उत्तर व्रत के अभाव अर्थात् हिंसादि पाँच पापों को अविरति कहते हैं अथवा व्रत विघाती कषायोद्वेग को अविरति कहते हैं।

प्रश्न 16. अविरति के कितने भेद हैं?

उत्तर अविरति के मुख्य बारह (12) भेद है।

प्रश्न 17. अविरति के बारह भेद कौन – कौन से हैं?

उत्तर स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और श्रोत इन पाँच इन्द्रियों तथा छठा मन इनके विषयों से विरक्ति न होना 6 प्रकार की अविरति है एवं पृथ्वीकायियक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक एवं वनस्पतिकायिक इन पाँच स्थावर और एक त्रस इन 6 प्रकार के जीवों की हिंसा से विरक्ति न होना, 6 प्रकार की अविरति है, इस प्रकार अविरति के कुल (6+6) = 12 भेद हैं।

प्रश्न 18. प्रमाद किसे कहते हैं?

उत्तर मोक्षमार्ग के हेतु भूत कार्यों में अकुशल वृत्ति को प्रमाद कहते हैं।

प्रश्न 19. प्रमाद के भेद कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर प्रमाद के मुख्य 15 भेद हैं –
चार कषाय, चार विकथा, पाँच इन्द्रियों के विषय, निद्रा और प्रणय (स्नेह)।

प्रश्न 20. विकथा किसे कहते हैं?

उत्तर संयम की विरोधी विकार जनक कथा या चर्चा करना विकथा है।

प्रश्न 21. चार विकथाएँ कौन सी है?

उत्तर 1. स्त्री कथा 2. भक्त (भोजन) कथा
3. चोर कथा 4. राज (अवनिपाल) कथा

प्रश्न 22. चारों विकथाओं को स्पष्टत: समझाइये?

उत्तर 1. स्त्रीकथा – स्त्रियों के विषय में रागवर्धिनी कथा करना जिससे वासना संबंधी भावना उत्पन्न हो।
2. भक्तकथा – खाने-पीने संबंधी कथा करना जिससे खाने पीने की लालसा उत्पन्न हो।
3. राजकथा – देश, राज्य राजा संबंधी कथा करना जिससे राग, द्वेष भावना उत्पन्न हो।
4. चोरकथा – रागवर्धनी चोरी संबंधी चर्चा करना जिससे चोरी करने के भाव उत्पन्न हो।

प्रश्न 23. कषाय किसे कहते हैं?

उत्तर जो आत्मा को कसे, विकृत करे उसे कषाय कहते हैं।

प्रश्न 24. कृष का क्या अर्थ है?

उत्तर कृष का अर्थ है जोतना अर्थात् सुख-दुख रूपी नाना प्रकार के धान्य को उत्पन्न करने वाले कर्मरूपी क्षेत्र को जो कर्षण करती है अर्थात्

फल उत्पन्न कराती है उसे कषाय कहते हैं।

प्रश्न 25. कषाय कितनी होती हैं?

अध्याय 4

संश्लेष संबंध

प्रश्न 1. जीव और कर्म का संश्लेष संबंध क्यों है?

उत्तर क्योंकि जीव प्रदेशों के साथ कर्म प्रदेश दूध और पानी की तरह एक दूसरे में संश्लेष रूप से मिले हुए हैं इसलिए इनका संश्लेष संबंध है इसी को बंध भी कहते हैं।

प्रश्न 2. बंध के मुख्य हेतु क्या हैं?

उत्तर बंध के मुख्य हेतु कषाय और योग हैं।

प्रश्न 3. बंध के कितने प्रकार हैं?

उत्तर बंध के मुख्य दो भेद हैं –

1. भावबंध 2. द्रव्यबंध

प्रश्न 4. भावबंध किसे कहते हैं?

उत्तर आत्मा के जिन परिणाम विशेषों से द्रव्यकर्म का बंध होता है उसे भावबंध कहते हैं।

प्रश्न 5. द्रव्यबंध किसे कहते हैं?

उत्तर पौद्गलिक कर्मों का तथा आत्मप्रदेशों का जो एक क्षेत्रावगाह रूप संबंध होता है उसे द्रव्यबंध कहते हैं।

प्रश्न 6. भावबंध के कितने भेद हैं?

उत्तर भावबंध के 32, 57 एवं असंख्यात लोक प्रमाण भेद हैं।

प्रश्न 7. द्रव्यबंध के कितने भेद हैं?

उत्तर द्रव्यबंध के 4 भेद हैं –

1. प्रकृतिबंध 2. प्रदेशबंध

3. स्थितिबंध और 4. अनुभागबंध।

प्रश्न 8. प्रकृति किसे कहते हैं?

उत्तर कर्मों के शील (स्वभाव) को प्रकृति कहते हैं अर्थात् जिस कर्म का आत्मा के जिस गुण को घातने का स्वभाव है उसे प्रकृति कहते हैं।

प्रश्न 9. कर्म की कितनी प्रकृति हैं?

उत्तर कर्म की मूल और उत्तर के भेद से दो प्रकार की प्रकृति हैं।

प्रश्न 10. मूल और उत्तर कर्म, प्रकृति के कितने भेद हैं ?

उत्तर कर्म की मूल प्रकृतियाँ आठ हैं –

1. ज्ञानावरणीय, 2. दर्शनावरणीय 3. वेदनीय
4. मोहनीय 5. आयु 6. नाम
7. गोत्र 8. अन्तराय और इन्हीं आठों कर्मो की उत्तर प्रकृति 148 हैं।

प्रश्न 11. प्रकृतिबंध व प्रदेश किससे होता है ?

उत्तर योग से प्रकृतिबंध व प्रदेशबंध होता है।

प्रश्न 12. प्रदेशबंध किसे कहते हैं ?

उत्तर योग विशेष से आगत अनन्त एवं एक क्षेत्रावगाह रूप में स्थित कर्म प्रदेश बंध को प्रदेश बंध कहते हैं।

प्रश्न 13. प्रदेश किसे कहते हैं ?

उत्तर आकाश के जितने हिस्से में एक अविभागी पुद्‌गल परमाणु ठहरता है। उसे प्रदेश कहते हैं।

प्रश्न 14. जीव कितने प्रदेशी हैं ?

उत्तर जीव असंख्यात प्रदेशी हैं।

प्रश्न 15. कर्म कितने प्रदेशी हैं ?

उत्तर कर्म अनन्त प्रदेशी है।

प्रश्न 16. आत्म प्रदेशों पर कर्म प्रदेश कितने और कैसे हैं ?

उत्तर आत्मा के प्रदेशों पर अनन्तानन्त कर्म प्रदेशबंध को प्राप्त है तथा अनंत कार्माण वर्गणाएँ विस्रसोपचय रूप अवस्था को प्राप्त है।

प्रश्न 17. विस्रसोपचय किसे कहते हैं ?

उत्तर जो कर्माण वर्गणाएँ कर्म रूप परिणमन के लिए उम्मीदवार है, तैयार है उन्हें विस्रसोपचय कहते हैं।

प्रश्न 18. कार्माण वर्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर कर्ममय परिणत होने योग्य पुद्‌गल स्कंधों (समूह) को कार्माण वर्गणा कहते हैं।

प्रश्न 19. वर्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर समान जातीय वर्गो के समूह को वर्गणा कहते हैं।

प्रश्न 20. वर्ग किसे कहते हैं ?

उत्तर समान शक्ति के धारक पुद्‌गल के अविभागी अंश को वर्ग कहते हैं।

प्रश्न 21. एक समय में कितने कर्मो का बंध होता है ?

उत्तर प्रत्येक समय में सिद्धों से अनंतवें भाग और अभव्यों से अनन्त गुणे कर्मो का या एक समय प्रबद्ध का बंध होता है।

प्रश्न 22. समय प्रबद्ध किसे कहते हैं ?

उत्तर एक समय में जितने कर्म प्रदेशों का बंध होता है उसे समय प्रबद्ध कहते हैं।

प्रश्न 23. प्रदेशबंध किसे कहते हैं ?

उत्तर कर्म कितनी संख्या में आत्मा से एक क्षेत्रावगाही होते हैं अर्थात् कर्मो की संख्या का नाम प्रदेशबद्ध है।

प्रश्न 24. स्थितिबंध किसे कहते हैं ?

उत्तर कर्मबंध की अवधि को स्थितिबंध कहते हैं।

प्रश्न 25. स्थितिबंध किससे होता है।

उत्तर स्थितिबंध कषाय से होता है।

प्रश्न 26. अनुभाग बंध किसे कहते हैं ?

उत्तर अनुभागबंध कर्म के फल देने की शक्ति को कहते है।

प्रश्न 27. चारों बंधों को किसी दृष्टान्त द्वारा समझाइये।

उत्तर जैसे – गुड़, शक्कर, मिश्री आदि की गणना प्रदेश है जब तक वे रहें स्थिति है। गुड़ शक्कर मिश्री तीनों मीठे होने पर भी गुड़ से अधिक मीठी शक्कर है, शक्कर से अधिक मीठी मिश्री है यह अनुभाग है। उसका मिठास प्रकृति है।

अध्याय 5

योग

प्रश्न 1. योग किसे कहते हैं ?

उत्तर जिसके निमित्त से आत्म प्रदेशों का परिस्पंदन होता है उसे योग कहते हैं।

प्रश्न 2. आत्मा के प्रदेशों का परिस्पंदन किस–किस निमित्त से होता है ?

उत्तर आत्मा के प्रदेशों का परिस्पंदन मन, वचन काय के निमित्त से होता है।

प्रश्न 3. योग के मुख्य एवं उत्तर भेद कितने हैं ?

उत्तर योग के मुख्य भेद 3 है। 1. मनोयोग, 2. वचनयोग और 3. काययोग तथा मनोयोग के चार, वचनयोग के चार एवं काययोग के सात भेद होते हें, सभी को जोड़ने से योग के कुल 15 भेद हो जाते हैं।

प्रश्न 4. मन योग के चार भेद कौन कौन से हैं ?

उत्तर सत्य, असत्य, उभय और अनुभय के भेद से मनोयोग के चार भेद होते हैं।

प्रश्न 5. वचनयोग के चार भेद कौन–कौन से हैं ?

उत्तर सत्य, असत्य, उभय और अनुभय के भेद से वचनयोग के चार भेद होते हैं।

प्रश्न 6. सत्य, असत्य मन व वचनयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर सत्य चिंतन को सत्य मनोयोग व सत्य बोलने को सत्य वचन योग कहते हैं। इसी प्रकार असत्य चिंतन को असत्य मनोयोग व असत्य कथन को असत्य वचनयोग कहते हैं।

प्रश्न 7. उभय मन व वचनयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर सत्यासत्य के मिश्र से जो चिंतन होता है उसे उभय मनोयोग व कथन होता है, उसे उभय वचनयोग कहते हैं।

प्रश्न 8. अनुभय मन व वचनयोग किसे कहते हैं ?

उत्तर जो न तो सत्य हो और न असत्य हो ऐसे चिंतन को अनुभय मनोयोग व उसी प्रकार के कथन को अनुभव वचनयोग कहते हैं।

प्रश्न 9. काययोग के सात भेद कौन – कौन से हैं ?

उत्तर 1. औदारिक काययोग

2. औदारिक मिश्र काययोग

3. वैक्रियिक काययोग

4. वैक्रियिक मिश्र काययोग

5. आहारक काययोग

6. आहारक मिश्र काययोग

7. कार्माण काययोग

प्रश्न 10. औदारिक मिश्र, वैक्रियिक मिश्र व आहारक मिश्र योग कब और कैसे होता है ?

उत्तर औदारिक मिश्र काय योग मनुष्य और तिर्यंच जीवों की अपर्याप्त अवस्था में होता है।

वैक्रियिक मिश्र देव और नारकी जीवों की अपर्याप्त अवस्था में होता है। आहारक मिश्र काययोग प्रमत्त संयत के आहारक शरीर की अपर्याप्त अवस्था में होता है।

प्रश्न 11. कार्माण काययोग किसे कहते हैं और इसकी प्रधानता कब होती है।

उत्तर कर्म रूप परिणत कार्माण पुद्‌गल स्कंधों के समूह को कार्माण काययोग कहते हैं। इसकी प्रधानता संसारी जीवों के विग्रहगति में होती है वैसे यह सभी संसारी जीवों में पाया जाता है।

अध्याय 6

ज्ञानावरणीय कर्म

प्रश्न 1. ज्ञानावरणीय कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर जो कर्म आत्मा के ज्ञान गुण को आवर्णित (आवृत) करता ढाँकता है उसे ज्ञानावरणीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 2. ज्ञानावरणीय कर्म को किसी दृष्टान्त द्वारा समझाइये।

उत्तर जैसे : पट अर्थात् पर्दा जिस प्रकार किसी विवक्षित पदार्थ का ज्ञान नहीं होने देता है, उसी प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म किसी विवक्षित वस्तु का ज्ञान नहीं होने देता है।

प्रश्न 3. ज्ञानावरणीय कर्म आस्रव के हेतु कितने हैं?

उत्तर ज्ञानावरणीय कर्म आस्रव के हेतु यद्यपि अनेक है किन्तु वे सभी निम्न छ: में ही गर्भित हो जाते हैं :-

1. प्रदोष	2. निह्नव
3. मात्सर्य	4. अन्तराय
5. आसादन और	6. उपघात।

प्रश्न 4. ज्ञानावरणीय कर्म के आस्रवों को स्पष्ट कीजिये।

उत्तर 1. प्रदोष : तत्त्व ज्ञान मोक्ष का साधन है, उसका गुणगान करने पर उसकी प्रसंशा करने वाले के जो भीतर पैशून्य का परिणाम होता है वह प्रदोष है।

2. निह्नव – किसी कारण से ऐसा नहीं है मैं नहीं जानता ऐसा कहकर ज्ञान का अललाप करना निह्नव है।

3. मात्सर्य – अभ्या से प्राप्त ज्ञान देने योग्य होने पर भी जिस कारण से नहीं दिया जाता है वह मात्सर्य है।

4. अन्तराय – ज्ञान का विच्छेद या उसमें विघ्न डालना अन्तराय है।

5. आसादन – दूसरे के द्वारा प्रकाशित किये गये ज्ञान को शरीर या वचन से निषेद कर देना अर्थात् दोष लगाना आसादन है।

6. उपघात – प्रशंसनीय ज्ञान में दूषण लगाना उपघात् है। ज्ञान के साधन पुस्तक, पेन आदि को छिपा देना आदि।

प्रश्न 5. ज्ञानावरणीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है?

उत्तर ज्ञानावरणीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तीस कोटा – कोटि सागर वर्ष की है।

प्रश्न 6. ज्ञानावरणीय कर्म की जघन्य स्थिति कितनी है?

उत्तर ज्ञानावरणीय कर्म की जघन्य सिति अंतर्मुहूर्त की है।

प्रश्न 7. ज्ञानावरणीय कर्म के कितने भेद हैं?

उत्तर ज्ञानावरणीय कर्म के मुख्य पाँच भेद हैं –

1. मतिज्ञानावरण
2. श्रुतज्ञानावरण
3. अवधिज्ञानावरण
4. मन:पर्ययज्ञानावरण
5. केवलज्ञानावरण

प्रश्न 8. इन पाँचों ज्ञानावरणों की परिभाषा बताइये।

उत्तर 1. मतिज्ञानावरण – जो मतिज्ञान का आवर्णित करता है।

2. श्रुतज्ञानावरण – जो श्रुतज्ञान को ढाँकता है।

3. अवधिज्ञानावरण – जो अवधिज्ञान को नहीं होने देता है।

4. मन:पर्ययज्ञानावरण – जिस कर्म के उदय से मन:पर्ययज्ञान नहीं हो सके।

5. केवलज्ञानावरण – जो कर्म केवलज्ञान न होने दे।

अध्याय 7

दर्शनावरणीय कर्म

प्रश्न 1. दर्शनावरणीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जो कर्म आत्मा के दर्शन गुण को आवर्णित करता है या ढाँकता है उसे दर्शनावरणीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 2. दर्शनावरणीय कर्म को किसी दृष्टान्त द्वारा समझाइये ?

उत्तर प्रतिहार अर्थात् द्वारपाल जैसे राजा आदि के दर्शन नहीं करने देता है उसी प्रकार जो कर्म सामान्य-सत्ता के ग्रहण रूप दर्शन को नहीं होने देता है।

प्रश्न 3. दर्शनावरणीय कर्मास्रव के कितने हेतु हैं ?

उत्तर दर्शनावरणीय कर्मास्रव के मुख्य ज्ञानावरणीय की तरह 6 हेतु हैं :-

1. प्रदोष, 2. निह्नव, 3. मात्सर्य

4. अन्तराय, 5. आसादन 6. उपघात।

प्रश्न 4. दर्शनावरणीय कर्मास्रव के छहों भेदों को स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर 1. प्रदोष - दर्शन -विषयक पैशून्यता प्रदोष है।

2. निह्नव - दर्शन या जिससे दर्शन हुआ है उसका नामादि छिपाना निह्नव है।

3. मात्सर्य - ईर्ष्या रूप परिणाम मात्सर्य है।

4. अन्तराय - दर्शन में विच्छेद या विघ्न अन्तराय है।

5. आसादन - किसी के द्वारा प्रदर्शित दर्शन में काय या वचन द्वारा निषेध करना आसादन है।

6. उपघात - प्रशंसनीय दर्शन में दूषण लगाना उपघात है।

प्रश्न 5. दर्शनावरणीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर दर्शनावरणीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तीस कोटा-कोटि सागर प्रमाण है।

प्रश्न 6. दर्शनावरणीय कर्म की जघन्य स्थिति कितनी है ?

उत्तर दर्शनावरणीय कर्म की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है।

प्रश्न 7. दर्शनावरणीय कर्म में कितने भेद हैं ?

उत्तर दर्शनावरणीय कर्म के नौ (9) भेद हैं।

प्रश्न 8. दर्शनावरणीय कर्म के नौ (9) भेदों को गिनाइये।

उत्तर 1. चक्षुदर्शनावरण 2. अचक्षुदर्शनावरण

3. अवधिदर्शनावरण 4. केवलदर्शनावरण

5. निद्रा 6. निद्रा - निद्रा

7. प्रचला 8. प्रचला - प्रचला

9. स्त्यानगृद्धि

प्रश्न 9. दर्शनावरण के सभी भेदों को लक्षण सहित समझाईये।

1. चक्षुदर्शनावरण

(1) जो कर्म चक्षुइन्द्रिय से होने वाले विशेष ग्रहण रूप ज्ञान के पूर्व सामान्य सत्ता का ग्रहण न होने दे।

(2) चाक्षुष विज्ञान को उत्पन्न करने वाला जो स्वग्रहण है वह चक्षुदर्शन है और उसका आवारक (रोकने वाला) कर्म चक्षुदर्शनावरणीय कर्म है।

2. अचक्षुदर्शनावरण :-

(1) जो कर्म चक्षुइन्द्रि के अलावा शेष इन्द्रियों से होने वाले ज्ञान के पूर्व सामान्य को ग्रहण न होने दे।

(2) श्रोत्र, घ्राण, जिव्हा, स्पर्शन और मन के निमित्त से उत्पन्न होने वाले बाह्यार्थ ग्रहण ज्ञान के कारणभूत ग्रहण का नाम अचक्षुदर्शन है और उसके आवारक या रोकने वाले कर्म का नाम अचक्षुदर्शनावरणीय कर्म है।

3. अवधिदर्शनावरण :-

(1) जो कर्म अवधिज्ञान के पूर्व होने वाले सामान्य के ग्रहण को न होने दे।

(2) परमाणु से लेकर महास्कंध पर्यन्त पुद्गल द्रव्य के विषय करने वाले अवधिदर्शन है और इसके आवारक कर्म का नाम

अवधिदर्शनावरण है।

4. केवलदर्शनावरण :-

(1) जो कर्म केवलज्ञान के साथ होने वाले केवलदर्शन को ग्रहण न होने दे।

(2) केवलज्ञान के साथ होने वाले स्वसंवेदन का नाम केवलदर्शन है और उसके आवारक कर्म का नाम केवलदर्शनावरणीय कर्म है।

5. निद्रा :-

(1) मद, खेद एवं परिश्रम से उत्पन्न थकान को दूर करने हेतु जो नींद ली जाती है वह निद्रा है।

6. निद्रा-निद्रा - जिस कर्म के उदय से नींद पर नींद आती है।

7. प्रचला :- जिस कर्म के उदय से चलते या बैठे हुए अथवा सोते हुए जो शरीर में क्रिया रूप प्रवृत्तियाँ वचन रूप प्रवत्ति होना।

8. प्रचला-प्रचला :- जिस कर्म के उदय से पुन: पुन: प्रचला रूप प्रवृति होती है।

9. स्त्यानगृद्धि - जिस कर्म के उदय से स्वप्न में ऐसी शक्ति का आविर्भाव होता हे जिससे कोई कार्य कर लिया जाता है और उसी स्वप्नावस्था में आकर पुन: सो जाता है।

अध्याय 8

वेदनीय कर्म

प्रश्न 1. वेदनीय कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर 1. जिस कर्म के उदय से सुख-दुख का वेदन होता है उसे वेदनीय कर्म कहते हैं।

2. जो कर्म आत्मा के अव्याबाधत्व गुण का घात करता है उसे वेदनीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 2. वेदनीय कर्म को दृष्टान्त द्वारा समझाइये।

उत्तर शहद लपेटी तलवार जैसे - शहद लपेटी तलवार को चाटने वाले व्यक्ति को शहद का स्वाद आने के साथ जीभ कटने पर दु:ख का भी वेदन होता है।

प्रश्न 3. वेदनीय कर्म के कितने भेद हैं?

उत्तर वेदनीय कर्म के मुख्य दो भेद हैं -

1. साता वेदनीय 2. असाता वेदनीय

प्रश्न 4. साता वेदनीय कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर जिस कर्म के उदय से संसारी जीवों को (देवादि-शुभ-गतियों में) शारीरिक व मानसिक सुख की प्राप्ति होती है उसे साता वेदनीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 5. असाता वेदनीय कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर जिसके उदय से संसारी जीवों को शारीरिक व मानसिक दु:ख की प्राप्ति होती है, उसे असाता वेदनीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 6. साता वेदनीय कर्म के हेतु कौन-कौन से हैं?

उत्तर साता वेदनीय कर्मास्रव के मुख्य हेतु निम्नांकित हैं -

1. सराय संगम - धर्मानुराग सहित मुनिव्रत का पालन।
2. भूतानुकम्पा - प्राणी मात्र पर दया।
3. व्रत्यानुकम्पा - व्रती जीवों पर दया।
4. दान - दूसरों को उपकारार्थ योग्य वस्तु का अर्पण।

5. संयामसंयम – बारह व्रतों का अनुपालन।

6. अकाम-निर्जरा – बिना इच्छा से (वे-मन से) की गई धार्म साधना

7. बाल तप – अज्ञानतापूर्ण मिथ्या तप।

8. शांति – क्रोधादि कषायों का शमन करना

9. शौच – लोभ का त्याग।

10. अर्हत् पूजा – जिनेन्द्र पूजा।

11. वैय्यावृत्ति – साधुजनों की सेवा आदि

प्रश्न 7. असाता वेदनीय कर्मास्रव कितने हैं?

उत्तर असाता वेदनीय कर्मास्रव निम्नांकित है –

1. दु:ख – पीड़ारूप आत्मा का परिणाम दु:ख है। सामान्य पीड़ा का होना।

2. शोक – वियोग पर होने वाला दु:ख।

3. ताप – आपत आदि के होने पर मानसिक दु:ख करना।

4. आक्रंदन – अश्रुधारा युक्त विलाप जन्य दु:ख करना।

5. वध – प्राणों को जुदा कर देना अथवा प्राणियों को मारना – पीटना।

6. परिवेदन – करूणाजनक रूदन करना।

प्रश्न 8. वेदनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है।

उत्तर वेदनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तीस कोटा – कोटि सागर प्रमाण है।

प्रश्न 9. वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति कितनी है?

उत्तर वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति बारह मुहूर्त की है।

अध्याय 9

मोहनीय कर्म

प्रश्न 1. मोहनीय कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर जो आत्मा को पर वस्तुओं में मोहित करता है अर्थात् अपने स्वरूप से भुला देता है उसे मोहनीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 2. मोहनीय कर्म को किसी दृष्टान्त द्वारा समझाइये।

उत्तर शराग, जैसे शराबी व्यक्ति की सुध – बुध (विवेक गुण) को नष्ट कर देती है वैसे ही मोहनीय कर्म है।

प्रश्न 3. मोहनीय कर्म के मुख्य कितने भेद हैं?

उत्तर मोहनीय कर्म के मुख्य दो भेद हैं।

1. दर्शन – मोहनीय

2. चारित्र – मोहनीय

प्रश्न 4. दर्शन मोहनीय कर्म किसे कहते हैं?

उत्तर जो कर्म आत्मा के दर्शन (श्रद्धा) गुण का घात करता है उसे दर्शन मोहनीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 5. दर्शन मोहनीय कर्म के कितने भेद हैं?

उत्तर दर्शन मोहनीय कर्म के 3 भेद हैं।

1. मिथ्यात्व

2. सम्यग्मिथ्यात्व

3. सम्यक् प्रकृति

प्रश्न 6. मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर अतत्त्व श्रद्धान को मिथ्यात्व कहते हैं।

आप्त आगम और पदार्थों में अश्रद्धा को उत्पन्न करने वाला कर्म मिथ्यात्व है।

प्रश्न 7. सम्यग्मिथ्यात्व किसे कहते हैं?

उत्तर जिस कर्म के उदय से न तो पूर्णत: सम्यकत्व रूप ही परिणाम होते हैं और न ही पूर्णत: मिथ्यात्व रूप ही परिणाम होते हैं अर्थात् गुड़ की तरह

मिले हुए मिश्र रूप परिणाम पाये जाते हैं उसे सम्यग्मिथ्यात्व कहते हैं। सम्यकत्व और मिथ्यात्व रूप दोनों भावों के संयोग से उत्पन्न हुए भाव का उत्पादक कर्म सम्यग्मिथ्यात्व है।

प्रश्न 8. सम्यक्त्व प्रकृति किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से देव, शास्त्र, गुरु में चल, मल और अगाढ़ दोष उत्पन्न होते हैं उसे सम्यक्त्व प्रकृति कहते हैं। उत्पन्न हुए सम्यक्त्व (देव शास्त्र, गुरु की श्रद्धा) में शिथिलता का उत्पादक और उसकी अस्थिरता का कारणभूत कर्म सम्यक्त्व कहलाता है।

प्रश्न 9. दर्शन – मोहनीय कर्म का आस्रव किन-किन हेतुओं से होता है ?

उत्तर केवली – अवर्णवाद, श्रुत-अवर्णवाद, धर्म – अवर्णवाद और देव अवर्णवाद दर्शन मोहनीय कर्म के आस्रव के हेतु हैं।

प्रश्न 10. उक्त पाँचों ही अवर्णवादों को स्पष्ट समझाइये।

अवर्णवाद – झूठा दोष लगाना अवर्णवाद है।

केवली-अवर्णवाद – जैसे : केवली कवलाहार करते हैं।

श्रुत-अवर्णवाद – जैसे: शास्त्रों में हिंसादि का वर्णन है।

संघ-अवर्णवाद – जैसे : मुनिराज अपवित्र होते हें या पंचमकाल में नहीं होते हैं या वे अवंदनीय हैं।

धर्म-अवर्णवाद – जैसे : सग्रंथ भी मोक्षमार्ग है।

देव-अवर्णवाद – जैसे : देव माँसादि भक्षण करते हैं।

इत्यादि प्रकार से अवर्णवाद करना दर्शन – मोहनीय कर्म के हेतु आस्रव के हेतु

प्रश्न 11. दर्शन मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर दर्शन मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोड़ा-कोड़ी सागर प्रमाण हैं।

प्रश्न 12. दर्शन मोहनीय कर्म की जघन्य स्थिति कितनी हैं ?

उत्तर दर्शन मोहनीय कर्म की जघन्य स्थिति "अंतर्मुहूर्त" है।

प्रश्न 13. चारित्र मोहनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जो कर्म आत्मा के चारित्र गुण का घात करता है उसे चारित्र मोहनीय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 14. चारित्र मोहनीय कर्म के मुख्य कितने भेद हैं ?

उत्तर चारित्र मोहनीय कर्म के मुख्य भेद दो हैं –

1. कषाय वेदनीय 2. नो कषाय (अकषाय) वेदनीय

प्रश्न 15. कषाय वेदनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर कषाय – सुख और दु:ख रूपी धान्य के उत्पन्न करने वाले कर्म रूपी क्षेत्र को जो कृषते हैं अर्थात् जोतते हैं ये कषाय है।

प्रश्न 16. कषाय वेदनीय कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से जीव कषाय का वेदन करता है, वह कषाय वेदनीय कर्म है।

प्रश्न 17. कषाय वेदनीय के कितने भेद हैं ?

उत्तर कषाय वेदनीय के कुल सोलह भेद हैं –

अनंतानुबंधी	क्रोध	मान,	लोभ।
अप्रत्याख्यान	क्रोध	मान,	लोभ।
प्रत्याख्यान	क्रोध	मान,	लोभ।
संज्वलन	क्रोध	मान,	लोभ।

प्रश्न 18. कषाय वेदनीय के भेदों को स्पष्ट समझाइये ?

उत्तर क्रोध = गुस्सा, मान = गर्व,

माया = छल कपट, लोभ = लालच।

अनंतानुबंधी : 1. जो क्रोध, मान, लोभ सम्यग्दर्शन चरित्र का विनाश करते हैं तथा जो स्वयं ही अनंत संसार रूप में है वह अनंतानुबंधी है।

2. अनंत भवों में जिनका अनुबंध चला जाता है वह अनंतानुबंधी कषाय कहलाती है।

अप्रत्याख्यान : अणुव्रत की अप्रत्याख्यान संज्ञा है उसका आवरक कर्म प्रत्याख्यानावरण कर्म है।

संज्वलन : जो यथाख्यात चारित्र को न होने दे वह संज्वलन कषाय है।

अध्याय 10

आयु कर्म

प्रश्न 1. आयु कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जो कर्म निश्चित समय तक जीव को विवक्षित पर्याय में रोके रहता है उसे आयु कर्म कहते हैं।

प्रश्न 2. आयु कर्म को किसी उदाहरण द्वारा समझाइये।

उत्तर जैसे - जंजीर निश्चित समय तक जीव को स्वतंत्र विचरण से रोक रहती है उसी प्रकार आयु कर्म रोक रहता है।

प्रश्न 3. आयु कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर आयु कर्म के चार भेद हैं -

1. नरकायु 2. तिर्यंचायु 3. मनुष्यायु 4. देवायु।

प्रश्न 4. नरकायु किसे कहते हैं ?

उत्तर जो कर्म जीव को निश्चित समय तक नरक पर्याय में रोके रहता है उसे नरकायु कर्म कहते हैं।

प्रश्न 5. नरकायु कर्म के आस्रव कितने हैं ?

उत्तर नरकायु का आस्रव बहुत आरंभ और परिग्रह रूप पापसंचय आदि करना है।

प्रश्न 6. नरकायु की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर नरकायु की उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागर है

प्रश्न 7. नरकायु की जघन्य स्थिति कितनी है।

उत्तर नरकायु की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है।

प्रश्न 8. तिर्यंचायु किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से जीव तिर्यंच अवस्था में विवक्षित समय तक रूका रहे उसे तिर्यचायु कहते हैं।

प्रश्न 9. तिर्यंचायु कर्म के आस्रव कौन से हैं ?

उत्तर छल, कपट, माया आदि तिर्यंचायु कर्म के आस्रव हैं।

प्रश्न 10. तिर्यंचायु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर तिर्यंचायु कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्य की है।

प्रश्न 11. तिर्यंचायु कर्म की जघन्य स्थिति कितनी है ?

उत्तर तिर्यंचायु कर्म की जघन्य स्थिति अंतमुहूर्त है।

प्रश्न 12. मनुष्यायु कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से जीव विपक्षित समय तक मनुष्य पर्याय में रूका रहे उसे मनुष्यायु कर्म कहते हैं।

प्रश्न 13. मनुष्यायु कर्मास्रव के हेतु कितने हैं ?

उत्तर अल्प आरंभ, अल्प परिग्रह और मार्दव स्वभाव आदि सदाचार मनुष्यायु कर्म के आस्रव हैं।

प्रश्न 14. मनुष्यायु की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर मनुष्यायु की उत्कृष्ट स्थिति तीन पल्य की है।

प्रश्न 15. मनुष्यायु की जघन्य स्थिति कितनी है ?

उत्तर मनुष्यायु की जघन्य स्थिति अंतमुहूर्त की है।

प्रश्न 16. देवायु किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से जीव विवक्षित समय तक देवपर्याय में रूका रहे उसे देवायु कहते हैं।

प्रश्न 17. देवायु के आस्रव कौन-कौन से हैं ?

उत्तर सराग-संयम, संयमासंयम, अकाम-निर्जरा, बाल-तप, पूजन-व्रत, सरागसम्यक्त्व आदि देवायु के आस्रव हैं।

प्रश्न 18. देवायु की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर देवायु की उत्कृष्ट स्थिति तेतीस सागर की है।

प्रश्न 19. देवायु की जघन्य स्थिति कितनी है ?

उत्तर देवायु की जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की है।

अध्याय 11

नाम कर्म

प्रश्न 1. नाम कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जिस कर्म के उदय से नाना प्रकार के आकार बनते है अथवा जो कर्म संसारी जीवों के नाना आकार बनाता है उसे नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 2. नाम कर्म को किसी दृष्टान्त द्वारा समझाइये।

उत्तर जिस प्रकार चित्रकार अनेक प्रकार के छोटे बड़े रंग बिरंगे चित्र बनाता है उसी प्रकार नाम कर्म है।

प्रश्न 3. नाम कर्म के आस्रव के हेतु क्या है ?

उत्तर मन, वचन, काय रूप योगों की वक्रता अशुभ नाम कर्म का आस्रव है और योगों की अवक्रता शुभ नाम कर्म का आस्रव है।

प्रश्न 4. नाम कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर नाम कर्म की उत्कृष्ट स्थिति बीस कोड़ा-कोड़ी सागर की है।

प्रश्न 5. नाम कर्म की जघन्य स्थिति कितनी है ?

उत्तर नाम कर्म की जघन्य स्थिति आठ अंतर्मुहूर्त की है।

प्रश्न 6. नाम कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर नाम कर्म के पिंड (अभेद) रूप से 42 और अपिंड (भेद) रूप से 93 भेद है।

प्रश्न 7. नाम कर्म के भेदों को समझाइये।

उत्तर 1. गति – गति नाम कर्म के उदय से होने वाली भव से भवांतर की प्राप्ति को गति कहते हैं।

गति चार होती है :-

1. देवगति – देवगति नाम कर्म के उदय से प्राप्त जीव की अवस्था विशेष को देवगति कहते हैं।

2. मनुष्यगति – मनुष्य गति नाम कर्म के उदय से प्राप्त जीव की अवस्था विशेष को मनुष्य गति कहते हैं।

3. नरकगति – नरकगति नाम कर्म के उदय से प्राप्त जीव की अवस्था विशेष को नरकगति कहते हैं।

4. तिर्यंचगति – तिर्यंच गति नामकर्म के उदय से प्राप्त जीव की अवस्था विशेष को तिर्यंचगति कहते हैं।

2. जाति :- जाति नाम कर्म के उदय से अव्यभिचारी सदृश्यता से एक रूप करने वाले विशेष को जाति कर्म कहते हैं।

अथवा

जिस कर्म के उदय से जीव एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रिन्द्रिय, चतुररिन्द्रिय और पंचन्द्रिय कहा जाता है इसके पाँच भेद हैं।

1. एकेन्द्रिय, 2. द्वीन्द्रिय, 3. त्रीन्द्रिय, 4. चतुररिन्द्रिय और 5. पंचेन्द्रिय।

एकेन्द्रिय – एकेन्द्रिय जाति के नाम कर्म के उदय से प्राप्त जीव की अवस्था विशेष को एकेन्द्रिय जाति कहते हैं।

(इसी प्रकार शेष जातियों को भी समझना चाहिये)

3. शरीर – जिसके उदय से जीव के शरीर की रचना होती है उसे शरीर नामकर्म कहते हैं।

इसके पाँच भेद होते हैं :-

1. औदारिक, 2. वैक्रियिक, 3. आहारक, 4. तैजस, 5. कार्माण।

1. औदारिक – मनुष्य और तिर्यंच के उदार या स्थूल शरीर को औदारिक शरीर कहते हैं।

2. वैक्रियिक शरीर – जिस कर्म के उदय से अणिमा, महिमा, आदि के द्वारा छोटा, बड़ा एक और अनेक रूप बनानेक वाले शरीर की प्राप्ति होती है उसे वैक्रियिक शरीर कहते हैं।

3. आहारक शरीर – सूक्ष्म पदार्थ का ज्ञान करने के लिए असंयम को दूर करने की इच्छा से प्रमत्तसंयत के जिस शरीर की रचना होती है वह आहारक शरीर है।

4. तैजस शरीर – जो दीप्ति का कारण है उसे तैजस शरीर कहते हैं।

5. कार्माण शरीर – कर्मों के समूह को कार्माण शरीर कहते हैं।

4. आंगोपांग नामकर्म – जिस कर्म के उदय से अंग और उपांगों की रचना होती है उसे आंगोपांग नाम कर्म कहते हैं।

इसके तीन भेद हैं :-

1. औदारिक शरीरांगोपांग , 2. वैक्रियिक शरीरांगोपांग 3. आहारक शरीरांगोपांग

5. निर्माण नामकर्म – जिस कर्म के उदय से शरीर में नाक, कानादि की रचना होती है उसे निर्माण नाम कर्म कहते हैं।

इसके दो भेद हैं :-

1. स्थान निर्माण 2. प्रमाण निर्माण

6. बंधन नाम कर्म – शरीर नाम कर्म के उदय से प्राप्त हुए पुद्गलों का अन्योन्य प्रदेश संश्लेष जिसके निमित्त से होता है उसे बंधन नामकर्म कहते हैं।

इसके पाँच भेद हैं :-

1. औदारिक शरीर बंधन, 2. वैक्रियिक शरीर बंधन 3. आहारक शरीर बंधन 4. तैजस शरीर बंधन 5. कार्माण शरीर बंधन।

7. संघात नामकर्म – जिस कर्म के उदय से औदारिक आदि शरीरों की छिद्र रहित होकर परस्पर प्रदेशों के अनुप्रवेश द्वारा एकरूपता आती है वह संघात नाम कर्म है।

इसके भी पाँच भेद हैं :-

1. औदारिक शरीर संघात, 2. वैक्रियिक शरीर संघात 3. आहारक शरीर संघात 4. तैजस शरीर संघात 5. कार्माण शरीर संघात

8. संस्थान – जिस कर्म के उदय से औदारिक आदि शरीरों की आकृति बनती है उसे संस्थान नामकर्म कहते हैं।

इसके छः भेद हैं :-

1. समचतरस्र संस्थान – जिस कर्म के उदय से शरीर के सभी अवयव उचित स्थानों में समुचित रूप होते है वह समचुतरस्र संस्थान है।

2. न्यग्रोध परिमण्डल संस्थान – जिस कर्म के उदय से शरीर की आकृति बटवृक्ष के समान (नाभि के ऊपर मोटा (स्थूल) और नाभि के नीचे पतला) होता है उसे न्यग्रोध परिमंडल संस्थान कहते है।

3. स्वाति संस्थान – जिस कर्म के उदय से शरीर की आकृति वामी के सदृश (नाभि के नीचे स्थूल और ऊपर पतला) होता है उसे स्वाति संस्थान कहते है।

4. कुब्जक संस्थान – जिस कर्म के उदय से शरीर कुबड़ा (पीठ या छाती के पुद्गल पिंड के बाहर की और उभरा) होता है उसे कुब्जक संस्थान कहते हैं।

5. वामन संस्थान – जिस कर्म के उदय से शरीर बौना होता है उसे वामन संस्थान कहते हैं।

6. हुण्डक संस्थान – जिस कर्म के उदय से शरीर अस्त, व्यस्त, अर्थात् अवयव उचित माप या स्थान पर नहीं होते हैं उसे हुण्डक संस्थान कहते हैं।

अथवा

विषम पाषाण से भरी हुई मशक के समान जो सब और से विषम होती है उसके समान आकार वाले संस्थान को हुण्डक संस्थान कहते हैं।

8. सहनन नाम कर्म – जिस कर्म के उदय से अस्थियों का बंधन विशेष होता है उसे सहनन नामकर्म कहते हैं।

इसके 6 भेद हैं –

1. वज्रवृषभ नाराच सहनन – वज्रमयी हड्डी और वृषभ अर्थात् वेष्टन इन दोनों को भेदकर जिसमें वज्रमय नाराच अर्थात् कीलें स्थित हैं वह वज्रवृषभ नाराच सहनन है।

2. वज्र नाराच संहनन – जिसमें वज्र नाराच तो हो पर वृषभ (वेष्टन) वज्र के न हों व वज्र नाराच संहनन है।

3. नाराच संहनन – जो वज्रमय नाराच व वृषभ दोनों से रहित हो वह नाराच संहनन है।

4. अर्ध नाराच संहनन – नाराच से आधा भिदा हुआ अर्थात् वज्र की

कीलों से आधा भिदा अर्ध नाराच संहनन है।

5. कीलक संहनन ' वज्र से रहित कीलों से कीलित संहनन कीलित संहनन है अर्थात् हड्डियों का परस्पर में कीलित होना कीलक संहनन है।

6. असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन – जिसमें स्नायुओं से हड्डियाँ बंधी होती है वह असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन है।

10. स्पर्श – जिस कर्म के उदय से स्पर्श होता है उसे स्पर्श नाम कर्म कहते हैं।

11. रस – जिस कर्म के उदय से स्वाद होता है उसे रस नाम कर्म कर्म कहते हैं इसके 5 भेद हैं।

12. गंध – जिस कम कर्म के उदय से गंध होती है उसे गंधनाम कर्म कहते हैं।

इसके दो भेद हैं – सुगंध व दुर्गन्ध।

13. वर्ण – जिस कर्म के उदय से वर्ण होता है उसे वर्ण नाम कर्म कहते हैं। इसके पाँच (5) भेद हैं।

14. आनुपूर्वी – जिस कर्म के उदय से विग्रहगति में पूर्व शरीर के आकार का विनाश नहीं होता है वह आनुपूर्वी नाम कर्म है।

इसके चार (4) भेद हैं : नरकगत्यानुवर्ती, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, देवगत्यानुपूर्वी।

15. अगुरुलघु – जिसके उदय से न लोहे के पिण्ड के समान भारी हो और न अर्कतूल के समान हल्का हो उसे अगुरुलघु नामकर्म कहते हैं।

16. उपघात – जिसके उदय से स्वयं के आंगोपांग आदि से स्वयं का घात हो उसे उपघात नामकर्म कहते हैं।

17. परघात – जिसके उदय से पर (शस्त्रादिक) का निमित्त पाकर व्याघात होता है उसे परघात नामकर्म कहते हैं।

18. आतप – जिसके उदय से शरीर में आतप होता है वह आतप नाम कर्म है वह सूर्य बिम्ब में रहने वाले पृथिवी कायिक जीवों में होता है।

19. उद्योत – जिसके उदय से शरीर में उद्योत होता है उसे उद्योत नाम कर्म कहते हैं इसका उदय चन्द्र बिम्ब और जुगनू में होता है।

20. उच्छ्वास – जिस कर्म के उदय से श्वास और उच्छ्वास होता है उसे उच्छ्वास नामकर्म कहते हैं।

21. विहायोगति – जिस कर्म उदय से विहायस् अर्थात् आकाश में गमन हो उसे विहायोगति कहते हैं इसके दो भेद है :- 1. प्रशस्त 2. अप्रशस्त

22. प्रत्येक शरीर – प्रत्येक शरीर नाम कर्म के उदय से एक शरीर का स्वामी एक ही जीव होता है अर्थात् एक ही आत्मा के उपभोग का विषय बनता है वह प्रत्येक शरीर नामकर्म है अथवा इस कर्म के उदय से एकेन्द्रिय प्रत्येक वनस्पति जीव होता है यथा : निम्ब वृक्ष।

23. साधारण शरीर – बहुत आत्माओं के उपभोग के हेतु साधारण शरीर जिसके उदय से होता है वह साधारण शरीर वनस्पति कर्म है।

24. त्रस – जिसके उदय से द्वीन्द्रियादिक में जन्म होता है त्रस नाम कर्म है।

25. स्थावर – जिसके निमित्त से एकेन्द्रियों में उत्पत्ति होती है वह त्रय नाम कर्म है।

26. सुभग – जिसके उदय से अन्य जन प्रीति करते है वह सुभग नाम कर्म है।

27. दुर्भग – जिसके उदय से रूपादि गुणों से युक्त होकर भी अन्य जन अप्रीति करते है वह दुर्गभ नाम कर्म है।

28. सुस्वर – जिसके उदय से मनोज्ञ स्वर होता है वह सुस्वर नाम कर्म है।

29. दुस्वर – जिसके उदय से अमनोज्ञ स्वर होता है वह दुस्वर नाम कर्म है।

30. शुभ – जिसके उदय से शरीर के अवयव रमणीय होते हें वह शुभ नाम कर्म है।

31. अशुभ – जिसके उदय से शरीर के अवयव अमनोज्ञ होते है वह अशुभ नाम कर्म है।

32. सूक्ष्म – जिसके उदय से सूक्ष्म शरीर की रचना हो वह सूक्ष्म नाम कर्म है।

33. बादर – अन्य को बांध कर स्थूल शरीर का जो निर्तिक कर्म है, वह बाद नाम कर्म है।

34. पर्याप्त – जिसके उदय से आहार आदि पर्याप्तियों की पूर्णता हो वह पर्याप्त नाम कर्म है।

इसके 6 भेद हैं : 1. आहार 2. शरीर 3. इन्द्रिय 4. श्वासोच्छ्वास 5. भाषा 6. मन

35. अपर्याप्त – जिसके उदय से 6 प्रकार की पर्याप्तियों की पूर्णता न हो वह अपर्याप्त नाम कर्म है।

36. स्थिर – रूधिर आदि सदा धातुओं के स्थिर भाव का निर्वर्तक कर्म स्थिर नाम कर्म है।

37. अस्थिर – उनके अस्थिर भाव निर्वर्तक कर्म अस्थिर नाम कर्म है।

38. आदेय – प्रभायुक्त शरीर का कारण आदेय नाम कर्म है।

39. अनादेय – निष्प्रभ शरीर का कारण अनादेय नाम कर्म है।

40. यशः कीर्ति – पुण्यगुणों का प्रसिद्धि का कारण यश:कीर्ति नाम कर्म है।

41. अयश:कीर्ति – यश:कीर्ति से विपरीत अयश:कीर्ति है।

42. तीर्थंकर – अर्हन्त पद का कारणभूत जो कर्म है वह तीर्थंकर प्रकृति नाम कर्म है।

अध्याय 12

गौत्र कर्म

प्रश्न 1. गौत्र कर्म किसे कहते हें ?

उत्तर 1. जिस कर्म के उदय से लोक में ऊँच-नीच का व्यवहार होता है उसे गोत्र कर्म कहते हैं।

2. संतान क्रम से आगत कुल क्रम को गोत्र कहते हैं।

प्रश्न 2. गोत्र कर्म को दृष्टान्त द्वारा समझाइये।

उत्तर जैसे : कुंभकार छोटो-बड़े बर्तन बनाता है उसी प्रकार छोटे-बड़े कुलों में जो उत्पन्न करता है वह गोत्र कर्म है।

प्रश्न 3. गोत्र कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर गोत्रकर्म के मुख्य दो भेद है 1. उच्च गोत्र 2. नीव गोत्र

प्रश्न 4. उच्च गोत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर लोक सम्मानिक कुल में उत्पन्न होना उच्च गोत्र कर्म है।

प्रश्न 5. उच्च गोत्र कर्मास्रव के कितने कारण हैं ?

उत्तर दूसरों के गुणों की प्रशंसा करना, उन्हें उद्घाटित करना तथा उनके दोषों को ढाँकना और अपने दोषों की निन्दा करना और अपने गुणों को ढाँकना, उच्च गोत्र कर्म के आस्रव है।

प्रश्न 6. नीच गोत्र कर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर जिसके उदय से लोक-निंदित कुलों में उत्पन्न होता है उसे नीच गोत्र कर्म कहते हैं।

प्रश्न 7. नीच गोत्र कर्मास्रव के कितने कारण हैं ?

उत्तर दूसरों की निंदा और अपनी प्रशंसा करना, दूसरों के गुणों को ढाँकना और अपने असद् गुणों को प्रकट करना नीच गोत्र कर्म के आस्रव है।

प्रश्न 8. गोत्र कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर गोत्र कर्म की उत्कृष्ट स्थिति बीस कोड़ा-कोड़ी सागर की है।

प्रश्न 9. गोत्र कर्म की जघन्यस्थिति कितनी है ?

उत्तर गोत्र कर्म की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त की है।

प्रश्न

अध्याय 13

अन्तराय कर्म

प्रश्न 1. अन्तराय कर्म किसे कहते हें ?

उत्तर जो कर्म दानादि में विघ्न करता है उसे अन्तराय कर्म कहते हैं।

प्रश्न 2. अन्तराय कर्म को दृष्टान्त द्वारा समझाइये।

उत्तर जैसे - भंडारी दान देते हुए राजा को दान देने से रोकता है उसी प्रकार अन्तराय कर्म है।

प्रश्न 3. अन्तराय कर्म के आस्रव के कितने कारण हैं ?

उत्तर दान, लोभ, भोग, उपभोग और वीर्य में विघ्न डालना ये सभी अन्तराय कर्मास्रव के कारण है।

प्रश्न 4. अन्तराय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति कितनी है ?

उत्तर अन्तराय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति तीस कोडा-कोड़ी सागर की है।

प्रश्न 5. अन्तराय कर्म की जघन्य स्थिति कितनी है ?

उत्तर अन्तराय कर्म की जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त है।

प्रश्न 6. अन्तराय कर्म के कितने भेद हैं ?

उत्तर अन्तराय कर्म के मुख्य 5 भेद है :-

1. दानान्तराय 2. लाभान्तराय

3. भोगान्तराय 4. उपभोगान्तराय 5. वीर्यान्तराय।

प्रश्न 7. अन्तराय कर्म के पाँचों भेदों को स्पष्ट समझाइये।

उत्तर 1. दानान्तराय - रत्नत्रय से युक्त जीवों के लिये वस्तु का त्याग करना दान है और ऐसे दान में विघ्न आना दानान्तराय है।

2. लाभान्तराय - अभिलाषित, लेने योग्य वस्तु को न ले सकना।

3. भोगान्तराय - भोग (एक बार प्रयोग में आई हुई) वस्तुओं को प्राप्त नहीं कर पाना।

4. उपभोगान्तराय - उपभोग (बार-बार प्रयोग में आने वाली) वस्तुओं को प्राप्त नहीं कर पाना।

5. वीर्यान्तराय - करने योग्य कार्य करने की शक्ति न होना या उसमें बाधा का आना वीर्यान्तराय कर्म है।

अध्याय 14

तीर्थंकर - प्रकृति

प्रश्न 1. तीर्थंकर किसे कहते हैं?

उत्तर जो धर्म तीर्थ को चलाते हैं, उन्हें तीर्थंकर कहते हैं।

प्रश्न 2. तीर्थंकर प्रकृति किसे कहते हैं?

उत्तर जिस कर्म के उदय से अनुपम प्रभाव, अचिंत्य विभूति से युक्त तीन लोक को विजय करने वाले अर्हन्त पद की प्राप्ति होती है उसे तीर्थंकर प्रकृति नाम कर्म कहते हैं।

प्रश्न 3. तीर्थंकर नाम कर्म के आस्रव के कितने कारण हैं?

उत्तर तीर्थंकर प्रकृति नाम कर्म के आस्रव भूत सोलह कारण भावना हैं।

प्रश्न 4. इन्हें सोलह कारण ही क्यों कहते हैं?

उत्तर सोलह संख्या से युक्त है इसलिये सोलह है तथा तीर्थंकर प्रकृति बंध में प्रत्येक भावना हेतु है। इसीलिये इन्हें सोलह कारण भावना कहते हैं।

प्रश्न 5. सोलह कारण भावनाएं कौन-कौन सी हैं?

उत्तर

1. दर्शन विशुद्धि,	2. विनय सम्पन्नता
3. शील व्रतेष्वनतिचारता	3. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग
5. संवेग	6. शक्तिस्त्याग
7. शक्तितस्तप	8. साधु समाधि
8. वैयावृत्यकरण	10. अर्हद भक्ति
11. आचार्य भक्ति	12. बहुश्रुत भक्ति
13. प्रवचन भक्ति	14. आवश्यकापरिहाणी
15. मार्ग प्रभावना	16. प्रवचन वत्सलत्व।

प्रश्न 6. भावना किसे कहते हैं?

उत्तर जिसे निरन्तर भाया जाये उसे भावना कहते हैं।

प्रश्न 7. दर्शन विशुद्धि किसे कहते हैं?

उत्तर जिन भगवान अर्हन्त परमेष्ठि द्वारा कहे हुए निर्ग्रन्थ स्वरूप मोक्षमार्ग पर रूचि/विश्वास रखना दर्शन विशुद्धि है।

प्रश्न 8. विनय सम्पन्नता किसे कहते हैं?

उत्तर सम्यग्ज्ञानादि मोक्षमार्ग तथा उनके साधन भूत निर्ग्रन्थ गुरु आदि के प्रति अपने योग्य आचरण द्वारा आदर सत्कार रूप विनय सम्पन्नता है।

प्रश्न 9. शीलव व्रतेष्वनतिचार किसे कहते हैं?

उत्तर अहिंसादि व्रत है तथा उनके पालन हेतु क्रोधादि का त्याग शील है इन दोनों का निरतिचार (निदोष) पालन करना शील व्रतेष्वनतिचार है।

प्रश्न10. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग किसे कहते हैं?

उत्तर जीवादि पदार्थ रूप स्वतत्त्व विषयक सम्यग्ज्ञान में निरन्तर लगे रहना अभीक्षण ज्ञानोपयोग है।

प्रश्न11. संवेग किसे कहते हैं?

उत्तर संसार के दुखों से निरंतर डरते रहना अथवा धर्म और धर्म के फलों में हर्षित होना संवेग है।

प्रश्न12. शक्तितस्त्याग किसे कहते हैं?

उत्तर त्याग का अर्थ दान है वह तीन प्रकार का है :-

1. आहार दान 2. अभय दान 3. ज्ञान दान 4. औषधि दान।

प्रश्न13. शक्तितस्तव किसे कहते हैं?

उत्तर अपनी शक्ति को न छिपाकर मोक्षमार्ग के अनुकूल शरीर को क्लेश देना शक्तितस्तप है।

प्रश्न14. साधु समाधि किसे कहते हैं?

उत्तर जैसे भंडार में आग लग जाने से बहुत उपकारी (भंडार) होने से आग को बुझाया जाता है उसी प्रकार अनेक तरह के व्रत और शीलवों से समृद्ध मुनि के तन करते हुए किसी कारण से विघ्न के उत्पन्न होने पर उसका संवारण करना (दूर करना/शांत करना) साधु समाधि है।

प्रश्न15. वैय्यावृत्ति किसे कहते हैं?

उत्तर गुणी पुरुष के दु:ख में आ पड़ने पर उसका निर्दोष विधि से उसका दु:ख दूर करना वैय्यावृत्ति है।

प्रश्न16. अर्हन्त भक्ति किसे कहते हैं?

उत्तर अनुभव और विशुद्धि से सहित अर्हन्त भगवान में श्रद्धा रखना अर्हन्त

भक्ति है।

प्रश्न17. आचार्य भक्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर आचार्यों के प्रति भावों की विशुद्धि के साथ अनुराग रखना आचार्य भक्ति है।

प्रश्न18. बहुश्रुत किसे कहते हैं ?

उत्तर बहुश्रुत (उपाध्यायों) के प्रति भावों की विशुद्धि के साथ अनुराग रखना बहुश्रुत भक्ति है।

प्रश्न19. प्रवचन भक्ति किसे कहते हैं ?

उत्तर प्रवचन अर्थात् शास्त्र, शास्त्रों की भक्ति करना प्रवचन भक्ति है।

प्रश्न20. आवश्यकापरिहाणी किसे कहते हैं ?

उत्तर छः आवश्यक क्रियाओं का यथा समय पालन करना आवश्यकापरिहाणी है।

प्रश्न21. मार्ग प्रभावना किसे कहते हैं ?

उत्तर ज्ञान, तप, दान और जिन पूजा इनके द्वारा धर्म का प्रकाश करना मार्ग प्रभावना है।

प्रश्न22. प्रवचन वत्सलत्व किसे कहते हैं ?

उत्तर जैसे – गाय बछड़े पर स्नेह रखती है उसी प्रकार साधार्मियों पर स्नेह रखना प्रवचन वत्सलत्व है।

प्रश्न23. क्या सभी भावना होने पर तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है या इनसे कम भावनाओं से भी तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है ?

उत्तर नही ! सभी भावना होना ही चाहिये ऐसा कोई नियम नहीं है पर दर्शन विशुद्धि भावना आवश्यक है इसके साथ एक, दो आदि भावनाओं के होने पर भी तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है।

प्रश्न24. क्या सभी भावनाओं में तीर्थंकर प्रकृति के बंध हेतुत्व नहीं हैं ?

उत्तर नही ! सभी भावनाओं में तीर्थंकर प्रकृति के बंध का हेतुपना है।